RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 25 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 27 नवम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

संस्कृति

थल का ऐतिहासिक एवं व्यापारिक मेला

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

थल। ऐतिहासिक और व्यापारिक थल मेला जारी है। इस मेले में भारत-नेपाले के ग्रामीणों के अलावा दूर-दराज से लोग पहुँच रहे हैं। सायंकाल होने वाले सांस्कृतिक सत्र में भी खासी भीड़ जुट रही है। इस बार मेले का उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने करते हुए दस लाख रुपये मेले लिये दिये जाने की घोषणा की।

काली-गोरी के संगम पर लगने वाले अन्तर्राष्ट्रीय मेले में सीएम ने कहा कि वह बचपन से ही यहाँ के रीति-रिवाजों को देखते आए हैं। यह सांस्कृतिक मेला हमारे विलुप्त होती लोक विरासत को संरक्षित कर रहा है। आने वाली पीढ़ी को हमारी लोक संस्कृति से परिचित कराने का कार्य भी कर रहा है। उन्होंने कहा कि सीमान्त क्षेत्र के गाँवों का सतत विकास हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। इस अवसर पर कुमाऊँ मण्डल विकास निगम द्वारा काली नदी पर युवाओं हेतु राफ्टिंग प्रशिक्षण का भी शुभारम्भ किया गया। विभिन्न विभागों द्वारा प्रदर्शनी में स्टाल भी लगाए गए हैं, इनका सीएम ने निरीक्षण किया।

शेष पृष्ठ 2 पर

बग्वाई

बग्वाली मेला : बुद्धिजीवियों का हस्तक्षेप हरा-भरा कर गया

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

अल्मोड़ा। बग्वालीपोखर में तीन दिवसीय बग्वाई कौतिक खूब चटक तरीके से मनाया गया। उल्लेखनीय बात यह है कि बुद्धिजीवियों के हस्तक्षेप के कारण बग्वालीपोखर क्षेत्र का सिमट रहा मेला हरा-भरा हो चुका है। इसमें प्रमुख भूमिका रंगकर्मी डॉ.दीपक मेहता की है जिन्होंने जगह-जगह से लोगों को जोड़ा। इस अभियान में जैसा की होता है करने वाले को ही सुनना पड़ता है, उन्हें भी सुनना पड़ा होगा लेकिन उनकी खूबी है कि वह बहुत ही सूझ के साथ अपने कार्य को अंजाम देते हैं। हालांकि मेले के असल स्वरूप के लिये अभी बहुत कुछ किया जाना है ताकि बिना आयात-निर्यात के स्थानीय स्तर के कलाकार ही इसके पूरी तरह सम्पादित कर सकें।

बग्वाई मेला समिति बग्वालीपोखर एवं क्षेत्रीय जनता के आमंत्रण पर दूर दराज से भी लोग और मंचों पर जलवा बिखेर रहे कलाकारों ने भागीदारी की। स्थानीय विधायक मदन सिंह बिष्ट, मनोहर भण्डारी, पत्रकार चारु तिवारी, समिति के वरिष्ठ नागरिकों द्वारा मेले का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया और शहीद स्मारक श्रद्धांजलि के बाद छोलिया नर्तकों ने अपना प्रदर्शन किया। इसके साथ ही भण्डर गाँव के प्रधान और थोकदार परिवारों के नेतृत्व में ओढ़ा भेंटने की निर्वहन किया गया। कार्यक्रम में बग्वाई कौतिक से जुड़े एवं क्षेत्र के विकास में अलग-अलग क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले वरिष्ठ नागरिकों को बग्वाई मेला समिति सम्मान से सम्मानित किया

शेष पृष्ठ 2 पर

जोहार के बिल्जू गाँव से ओम पर्वत के दर्शन

जगदीश वृजवाल

मुनस्यारी, जोहार ग्रीष्म कालीन प्रवास पर जाने वाले जोहार के शौकाओं का गाँव जो तिब्बत व्यापार के चलते आबाद था। यहाँ के बारह गाँव में मिलम, पांछू,बिल्जू, गनघर, मापा, बूर्फू, मर्तोली, टोला, ल्वां, रिलकोट, सुमुदू, खिलांच, लास्पा में कई शौका उपजाति के लोग निवास करते थे। यहाँ के अधिकांश गाँव जाति के नाम से ही बसे हैं जैसे- बिल्जू के बिलज्वाल, मापा के मपवाल, टोला के टोलिया आदि सभी शौका कहलाते हैं।

जोहार घाटी का इतिहास भी कफी उथल-पुथल भरा हैं यहाँ सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिवर्तन का दौर भी चलता रहा, किन्तु यहाँ के सामाजिक आकर्षण ने कयी जाति, समुदाय के लोगों को जोहार आकर बसने के लिए प्रेरित किया तथा एक साथ समाहित होकर शौका कहलाये। जिन्होंने शौका संस्कृति को विकसित कर अपनी सुदृढ़ पहिचान भी बनाई है।

जोहार का एक गाँव बिल्जू वहाँ के मूल निवासी बिलज्वाल (बृजवाल) दोंस्पा (दास्पा) जिसके पूर्वज भी गढ़वाल से जोहार विल्जू आकर रहने लगे। यह मुनस्यारी मुख्यालय से लगभग 57 किमी दूरी पर स्थिति है। यह महान हिमालय के पूर्वी ढलान के तलहटी, पश्चिम की तरफ, उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली गोरी नदी से किनारे ऊपर 50 मी की दूरी पर बसा है। गाँव से दक्षिण की ओर बिल्जू गार(नदी) पश्चिम दिशा से पूर्व की ओर बहती आगे गोरी नदी में मिल जाती हैं।

बिल्लू गांव तथा ओम पर्वत की कहानी तथा जिसकी उपेक्षा व अनभिज्ञता कुछ समझ से परे है। इस शिवदर्शन स्थल पौराणिक काल के जोहार क्षेत्र के स्वर्ण भूमि की कल्पनाओ को साकार भी कर देता है।

गाँव में एक पुरातन धर्मशाला आज भी विद्यमान है। उसके दरवाजे के चौखट से ऊपर लकड़ी में उत्कीर्ण शब्द इस विषय का प्रमाण देता है कि उस धर्मशाला का निर्माण दो भाइयों के सहयोग से बनाया गया है। जनश्रुति पहले समय में कैलाश मानसरोवर यात्रा केवल जोहार घाटी से ही की जाती थी. जोहार से ही यात्रा करना शुभ व फलीभूत समझा जाता था।

1670 ई0 में राज बाजबहादुर चंद ने भी कैलाश मानसरोवर यात्रा जोहार घाटी से ही की थी। कुशाग्र बुद्धिजीवी व्यक्ति लोरू बिलज्वाल के द्वारा चंद शासक की अगुवाई मानसरोवर तक की गई। अपनी राजधानी अल्मोड़ा लौटने के बाद लोरू बिलज्वाल को मल्ला दुम्मर में कोश्यारी बाड़ा व तल्ला दुम्मर जागीर प्रदान किया गया था।

ओम पर्वत बिल्जू गाँव से लगभग 150 मी दूरी पर गफ्फू धार (गफ्फू चोटी) पूर्वी ढलान मैं नन्दा मन्दिर से सिर्फ 50 मी चढ़ाई पर छोटा-सा समतल एक रमणीक, मनमोहन, प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर धार्मिक आस्था स्थल के रूप में भी विद्यमान है। जहाँ से सम्पूर्ण जोहार घाटी का नजारा एक श्रृखंलाओं में देखी जा सकती है। नन्दा देवी, नदाकोट, त्रिशुली, हरदेवल, मिलम ग्लेशियर आदि हिमपर्वत का दर्शन इस स्थल से किया जा सकता है।

ओम पर्वत का शानदार नजारा बिलजू गाँव से लगभग 150 मी चढ़ाई चढ़कर आसानी से गफ्फ धार से भदेली ग्वार क्षेत्र च्योंच चोटी से नहीं समतल ढलान पर बर्फ से उत्कीर्ण है ऐसा लगता मानो साक्षात शिव दर्शन हो चुका है। पहली बार भगवान शिव के मुखवाणी से निकला शब्द हमें एहसास कराती है इस स्थल का महत्व कभी न कभी धार्मिक आस्था से अवश्य जुड़ी होगी।

बिल्जू के पूर्व लोगों का कथन है कि जब जोहार घाटी से कैलाश मानसरोवर यात्रा की जाती थी तब बिल्जू एक मुख्य पड़ाव हुआ करता था। यहाँ यात्री व साधू-संन्यासियों का खूब

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

मेलों को लपकने की परम्परा

मेले किसी भी समाज को उल्लासित करने की दीर्घ परम्परा रही है, वह मिलन स्थल, आस्था केन्द्र, व्यापार गतिविधियों, लोक कलाकारों को अवसर देने वाली जगह होती हैं। यही कारण है कि जब भी शासन-सत्ता को अपने सन्देश कहने होते थे वह इनका सहारा लेते थे। इसके अलावा जब-जब जन समुदाय नाराज हुआ उसने भी अपनी लामबन्दी के लिये इसे चुना। पहले से मेलों के संरक्षण के लिये राजा-रजवाड़े खुलकर सामने आते थे और एक दूसरे स्थान के लोगों का मिलना भी हो जाता था। समय के साथ मनोरंजन के साधन बदलने लगे हैं और व्यस्त होती जीवन चर्या में मेलों का पुरान स्वरूप बिगड़ने लगा है। इन्हें लपकने के लिये राजनीतिक धाराएं चल पड़ी हैं। संस्कृति के नाम पर भी इन्हें घेर कर अपने प्रचार का साधन बनाया जाने लगा है।

बहुत दूर नहीं हम उत्तराखण्ड के ही तमाम बड़े मेलों को देख लें उनमें लोक कलाकारों के नाम पर वह सब होने लगा है जिसकी कल्पना नहीं थी। राजा-रजवाड़ों का दौर तो रहा नहीं जब व्यवस्था के तहत आयोजन होता था और मिली जिम्मेदारी के अनुसार कार्य होते थे। अब मेला करने के लिये या तो जागरूक क्षेत्रवासी हों या इसके लिये कोई कमेटी बनाई जाती है। होने यह लगा है कि साधन जुटाने के लिये कमेटियां बनती हैं वह भी स्थानीय निकाय या किसी नेता के दबदबे के साथ गठबन्धन प्रकार होता है और शुरु हो जाता है मेला। फिर होना क्या है.....वही सब होगा जो वह चाहें। स्थानीय लोगों की श्रद्धा तो उस देवालय को लेकर ही होती है जिसमें वह पीढ़ियों से जाते रहे हैं। बांकी कौन आ रहा है, बाजार सजा रहा है, टिकट बांट रहा है, मंच में लटक-झटक कर रहा है, रोकड़े को जोड़-घटाना कर रहा है, उन्हें कोई मतलब नहीं। मतलब वही रखते हैं जिनकी तीखी नज़र हो याने निकाय के चुनाव में खड़ा होना हो या जिला पंचायत से लेकर किसी अन्य तक पहुँचना हो, प्रशासन में पकड़ बनानी हो, अपनी बिगड़ी को धोना हो। ऐसे में कैसे भरोसा करें की आने वाले समय में हमारी मेला संस्कृति अपने मूल स्वरूप में रहेगी। इसके लिये जरूरी है कि इन्हें संरक्षण देने के लिये आडम्बर न किया जाए और जो हकदार लोग हैं उन्हें सहारा मिले।

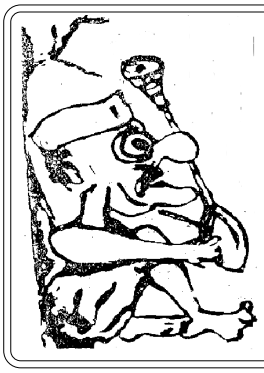

फसक

दाज्यू, चुनाव से पहले धुंवा उठने ही वाला ठैरा

निकाय चुनावों को लेकर ज्यादा लपलपाट हो रही है बल

दाज्यू, दीपावली के पटाखों की गन्ध अभी तक हमारे गले में पैठी हुई है लेकिन क्या करें अब अपने मगन दा के साथ लगना है। वह लोकसभा चुनाव की तैयारी कर रहे हैं। शाम को गले का इन्तजाम कर दूंगा कह रहे थे.....। पार्टी वाले कह रहे रहे हैं रणनीति बनाओ और बूथ तक फैल जाओ। दाज्यू, चुनाव से पहले धुंआ उठने ही वाला ठैरा। पता नहीं कितने जुगनू आगे-पीछे घूमने लगे हैं। निकाय चुनाव को लेकर ज्यादा लपलपाट हो रही है बल। इस बार रघ्घु ने भी कसम खा रखी है कि नगर पालिका परिषद अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ेगा। मोहल्ले में बहार है। सुबह-सवेरे चाय से लेकर शाम को पीने तक का इन्तजाम हो चुका है।

जीवट सिंह भी वार्ड मेम्बर बनने की सोच रहा था लेकिन क्रिकेटर महेन्द्र धौनी से मुलाकात के बाद उसने इरादा बदल दिया है। धौनी जैसे ही अपने गाँव देखने पहुँचे भीड़ जुटने लगी। धौनी के साथ ब्वारी साक्षी भी थी। उन्होंने गाँव के मन्दिरों में पूजापाटी की। जीवट सिंह वहीं जाकर धौनी के साथ सेल्फी लेकर आये थे। कह रहे थे- 'धौनी ने अंगाव लगाया।'

कालाढूंगी के विधायक बंशीधर भगत बहुत खुश हैं। उनका कहना है- 'अबके संकल्प ले रखा है, भाजपा 400 पार है।' दाज्यू, सबकी क्वीड़ सुननी ठैरी। हरदा कुछ और ही कह रहे हैं। मोदी ज्यू ने भयंकर कर रखा है। वह कह रहे हैं- 'हमारी सरकार ने बीते 5 वर्षों में 13 करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है।' पिथौरागढ़ में विधायक मयूख महर के नेतृत्व में चल रहा धरना मुख्यमंत्री से वार्ता के बाद समाप्त हुआ। विधायक महर का कहना है' 'धामी भगवान के दूत माने जाते हैं इसलिये उन्हें उम्मीद है कि वह अपने वादे में खरा उतरेंगे।'

दाज्यू, कथा ही कथा ठैरी कितना सुनाएं? काशीपुर में भाजपा के वरिष्ठ नेता के खिलाफ फेसबुक में अभद्र टिप्पणी करने पर उनके समर्थकों ने पुलिस को तहरीर सौंपी। कहा कि नेता जी बहुत अच्छे हैं। रुद्रपुर में नशे के खिलाफ मोर्चा खोल चुकी महिलाओं की ताकत देखते हुए विधायक अरोरा भी दौड़कर आ गये बल। उनके बाद पुलिस एक्शन हुआ और शराब तस्करी के आरोपी पकड़े गये। दाज्यू, एक्शन-रिएक्शन होता रहता है बल। गोपेश्वर में लाखों के गबन में पोस्टमास्टर को विहार से गिरफ्तरी की लिया है। अमेरिका में नौकरी देने का झांसा देकर 8 लाख रुपये की ऑनलाइन ठगी हो चुकी है बल। दाज्यू, कितना ही मंत्र पढ़ लो लोगबाग झांसे में आ ही जाने वाले ठैरे। एसएसजे विश्व विद्यालय की व्यवस्थाएं अभी तक गुल बुल हो रही हैं बल। भगवान जाने आगे क्या होगा। बच्चे रिजल्ट को लेकर कालेजों के चक्कर लगा रहे हैं। कोई कहता है नाम गलत है तो कोई पिता का नाम..

-तुम्हारा भुली झकरुवा

जोहार के बिल्जू...

प्रथम पृष्ठ का शेष

जमघट लगा रहता था। हमें भी पूर्वज कुछ इस विषय में संकेत दे चुके थे। कहते थे बिल्जू में शाम को कैलाश मानसरोवर जाने वाले यात्री, बाबा लोग खूब भजन कीर्तन भी करते दिखाई देते थे। लेखक ने अपने बुजुर्गों की मुखवाणी से सुनी बात है।

लगता है कि पूर्व में कैलाश यात्रा पर जाने वाले लोगों को गफ्फू धार व ओम पर्वत की जानकारियां अवश्य थी। यहीं से ओम पर्वत का प्रथम दर्शनार्थ के बाद कैलाश मानसरोवर यात्रा को बढ़ते होंगे। कहा यह भी जाता है कि जोहार घाटी से की गई यात्रा ही शुभ व फलीभूत मानी जाती है। अति दुर्गम रास्ते के चलते धीर-धीरे अन्य घाटीयो से भी कैलास मानसरोवर यात्र जाने का सिलसिला शुरू हुआ तथा इस घाटी में भारत तिब्बत व्यापार के बाद तो सदैव के लिए मानसरोवर यात्रा बन्द हो गयी थी। कालान्तर में इस ओम पर्वत की उपेक्षा क्यों हुई, समझ से परे है। इसे जानने की जरूरत भी है।

बिल्जू गाँव के धर्मशाला के पास भूमियाल देवता का स्लेटनुमा प्रस्तर खण्ड भी अत्यधिक पुरातन है। इसके स्थापित के विषय में बुजर्ग लोग भी बताने में असमर्थ थे। आज भी प्रवास में जाने वाले लोग सर्वप्रथम भूमियाल देवता के पूजा-पाठ के वाद अपने-अपने आगे का कार्य सम्पादन का शुभारम्भ करते हैं

बिल्जू गाँव को गफ्फू धार (गफ्फू चोटी) छोटा-सा समतल क्षेत्र जिस बिन्दु स्थल से जोहार घाटी के रमणीक, मनमोहक दृश्य का सम्पूर्ण नजारों का अवलोकन करते हैं तो ओम पर्वत देव दर्शन, प्रकृति, प्राकृतिक सौन्दर्य का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। इस पर्यटन स्थल का ध्यानाकृष्ट सरकार, पर्यटन विभाग उत्तराखण्ड को भी अवश्य रखनी चाहिए, धार्मिक आस्था स्थल, पर्यटन को बढ़ावा हेतु आधुनिक संसाधनों से विकास, विकसित किया जा सकता है।

जोहार घाटी में आने वाले सभी पर्यटकों, यात्रियों से अपील करते हैं कि एक बार आप अवश्य बिल्जू गफ्फू धार स्थल पर आकर अपनी जोहार के यात्रा को सफल बनाएं। प्रभू शंकर के मुंहवाणी से प्रथम शब्द निकले ॐ शब्द को पवित्र स्थल से उच्चारित कर साक्षात शिव दर्शन अवश्य करें। बिल्जू ग्रामवासी सदैव आपकी मंगलमय शुभयात्रा की कामनाओं के साथ शुभकामनाएं देती है

निवेदक - समस्त बिल्जू प्रवासी ग्रामीण

बग्वाली मेला : बुद्धिजीवियों का.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गया। इनमें मनोहर सिंह भण्डारी, हरि शरण शर्मा, शिव दत्त पाण्डे, मोहन सिंह बिष्ट, शेर राम (समधी दास), राजेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, भूपाल सिंह भरड़ा, गोपाल सिंह बिष्ट, ललित मोहन पाण्डे, भवान सिंह भण्डारी, बहादुर सिंह भण्डारी को सम्मानित किया गया। पत्रकार चारु तिवारी को लोक प्रकृति संस्था और बग्वाई मेला समिति द्वारा संयुक्त रूप से इस वर्ष का 'लोक प्रकृत्ति सम्मान' दिया गया। उन्हें यह सम्मान लोक प्रकृति के अध्यक्ष डॉ. दीपक मेहता एवं बग्वाई मेला समिति के अध्यक्ष सूबेदार मेजर हरी सिंह भण्डारी द्वारा प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में पूर्व विधायक महेश नेगी, पूर्व विधायक पुष्पेश त्रिपाठी, गिरीश त्रिपाठी भी युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिये पधारे। बग्वाई समिति द्वारा कुन्दन सिंह मेहता, डॉ.डीडी जोशी, प्रताप सिंह शाही, मोहन सिंह भण्डारी, लीलाधर जोशी, शान्ति देवी को सम्मानित किया गया।

बग्वाल मेले में ओढ़ा भेटने जाते लोग

स्थानीय विधायक की उपेक्षा पर समर्थकों में नाराजी

जौलजीवी। काली-गोरी नदी के संगम स्थल पर लगने वाले अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के उद्घाटन अवसर पर स्थानीय विधायक हरीश धामी की उपेक्षा से उनके समर्थकों में खासी नाराजी है। उनका कहना है कि आज तक ऐसा नहीं हुआ कि क्षेत्रीय विधायक के बिना मेले में अन्य लोगों को ही मौका मिले। कैसा भी समय रहा हो क्षेत्रीय विधायक होने के नाते उन्हें अवसर दिया जाता है चाहे वह किसी भी पार्टी का हो। उद्घाटन अवसर पर सीएम के साथ कई लोग पधारे लेकिन इस क्षेत्र के विधायक का नाम तक मंच से नहीं लिया गया। मेले हमारी उन्नत और दीर्घ परम्परा का हिस्सा हैं इनमें भी दूषित मानसिकता के साथ कार्य होंगे तो वह अच्छी बात नहीं है। जौलजीवी मेले में हमेशा स्वस्थ परम्परा रही है।

थल का ऐति.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस अवसर पर सांसद अजय टम्टा, जिला पंचायत अध्यक्ष दीपिका बोहरा, डीडीहाट के विधायक बिशन सिंह चुफाल, ब्लाक प्रमुख धारचूला धन सिंह धामी, डीडीहाट बबीता चुफाल, नगर पालिका अध्यक्ष धारचूला राजेश्वरी देवी, डीडीहाट कमला चुफाल, जिला पंचायत सदस्य गंगोत्री दताल, जिलाधिकारी रीना जोशी, एस.पी. लोकेश्वर सिंह, नेपाल के दार्चुला जिला प्रमुख किशन जोशी सहित दोनों देशों के नागरिक व संस्कृति कर्मी उपस्थित थे।

धारचूला-मुनस्यारी विधायक हरीश धामी ने मेले के अवसर पर सभी को बधाई देते हुए परम्परा बनाये रखने को कहा। समाजसेवी शकुन्ता तदाल, जौलजीवी व्यापार संघ अध्यक्ष धीरु धर्मशक्तू ने भी इस पुरातन यादों को बचाने की अपील की है।

बताते चलें कि पिथौरागढ़ से 68 किमी की दूरी पर काली नदी किनारे बसे क्षेत्र में बसे जौलजीवी का यह मेला भारत-नेपाल की साझा संस्कृति को दर्शाता है। अस्कोट के पाल राजा गजेन्द्र बहादुर पाल ने 1914 में यह मेला प्रारम्भ किया था। 1962 से पहले तिब्बत के लोग भी इस मेले में भागीदारी करते थे। भारत-चीन युद्ध के बाद तिब्बत के लोगों का यहाँ आना बन्द हो गया। वर्तमान में तिब्बत का सामान नेपाल के रास्ते इस मेले में आता है। पहले से नेपाल से आए घोड़ों की भी खूब बिक्री होती थी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सजगता जरूरी

आपदा की दृष्टि से सम्वेदनशील उत्तराखण्ड

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

बस, ये बरसात बीत जाए तो चल जाएगा। आपदा की दृष्टि से सम्वेदनशील उत्तराखण्ड का परिदृश्य को कुछ ऐसा ही बयां कर रहा है। एक आपदा आने के बाद तंत्र दूरदृष्टि वाले सपने बुनता है और तमाम तरह के दावे किए जाते हैं, लेकिन इनकी कलई तब खुलती है जब दूसरी आपदा में तंत्र मूकदर्शक की भूमिका में ही दिखता है। इस बार के ही हालात देखें तो अतिवृष्टि से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। उस पर आपदा प्रबन्धन की स्थिति यह है कि सड़कों को खुलवाने में ही कई-कई दिन लग जा रहे हैं। ऐसा ही अन्य मामलों में भी है। इस सबको देखते हुए अब आपदा प्रबन्धन को लेकर नए सिरे से सोच-विचार की जरूरत है। विषम भूगोल वाले उत्तराखण्ड का प्राकृतिक आपदाओं से चोली-दामन का साथ है। अतिवृष्टि, भूस्खलन, बादल फटना, बाढ़, भूकम्प जैसी आपदाओं से राज्य निरन्तर जूझ रहा है। ऐसे गाँवों की संख्या चार सौ का आंकड़ा पार कर चुकी है, जो आपदा के दृष्टिकोण से बेहद सम्वेदनशील हो गए हैं। यह सही है कि आपदा पर किसी का वश नहीं चलता, लेकिन बेहतर प्रबन्धन से इसके असर को न्यून किया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण से सरकार ने अलग से आपदा प्रबन्धन विभाग भी गठित किया है। यद्यपि आपदा न्यूनीकरण के तहत विभाग समय-समय पर कदम उठाता आया है लेकिन इनमें निरन्तरता, समन्वय, मॉनिटरिंग का अभाव अखरता है। यही कारण है कि आपदा आने पर वह गम्भीरता नहीं दिखती, जिसकी दरकार है। आपदा के समय फौरी तौर पर कुछ व्यवस्था अवश्य होती है लेकिन कुछ दिन बाद मामला जस का तस हो जाता है। आपदा प्रबन्धन विभाग अभी तक पूरी तरह से सशक्त नहीं हो पाया है। उसके पास स्टाफ के साथ ही विशेषज्ञों का अभाव है। अधिकांश लोग उपनल अथवा संविदा पर कार्यरत हैं और इनकी संख्या भी बेहद कम है। ऐसे में जब काम करने वाले हाथ ही नहीं होंगे तो आपदा न्यूनीकरण, चेतावनी तंत्र, उपकरणों की देखभाल कैसे होगी, यह अपने आप में बड़ा विषय है। हालांकि प्रदेश के 5 जिलों में सामान्य से कम वर्षा भी दर्ज हुई। अवर्षण भी एक आपदा ही है। एक तरफ असामान्य बारिश और दूसरी तरफ भूस्खलन जैसी आपदायें सहोदर राज्य हिमाचल और उत्तराखण्ड के लिए बहुत गम्भीर खतरे के सबब बने हुये हैं। आपदाओं की बढ़ती आवृति को देखते हुए यह कहना असंगत न होगा कि अपनी मुसीबत के लिए इंसान स्वयं ही ज्यादा जिम्मेदार है। विकास के नाम पर प्रकृति के साथ बेतहासा छेड़छाड़ से भी आपदाएं बढ़ रही है। हिमाचल में हुए विनाश के पीछे चौड़ी सड़कों के लिए पहाड़ों को बेतहासा कटान माना जा रहा है। लेकिन ऑल वेदर रोड के नाम पर उत्तराखण्ड में जिस तरह पहाड़ों का कत्लेआम कर आपदाओं को दावत दी गयी उस पर मुख्यधारा का मीडिया भी पर्दा डालता रहा। सन् 2013 में केदारनाथ आपदा के बाद फरवरी 2021 में हिमालय के अन्दर धौली गंगा की बाढ़ से हमने सबक नहीं सीखा है। धंसते हुए जोशीमठ की ओर हम 1975 से आँखें मूंदे हुए थे। यद्यपि अब इसे लेकर उच्च स्तर पर मंथन शुरू हो गया है, इसके क्या नतीजे आते हैं, इस पर सभी की नजर है। ये बात अलग है कि निर्जन हो चुके गाँवों में जिन व्यद्रियों की भूमि व भवन हैं, उन्हें इसके लिए राजी करना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होगा। राज्य में अतिवृष्टि, भूस्खलन, नदियों की बाढ़, भूकम्प जैसी आपदाओं के कारण प्रभावित गाँवों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। पर्वतीय क्षेत्र में ऐसे गाँवों की संख्या सर्वाधिक है। इसे देखते हुए आपदा प्रभावित गाँवों के पुनर्वास के लिए वर्ष 2011 में पुनर्वास नीति आई लेकिन शुरुआत में इसकी गति बेहद धीमी रही। केवल दो गांवों के 11 परिवार ही विस्थापित किए गए। इसके बाद इस मुहिम में तेजी आई और 2016 से अब तक 86 गाँवों के 1485 परिवारों को विस्थापित किया गया। अभी भी शासन स्तर पर 10 गाँवों के 78 और जिला स्तर पर 22 गाँवों के 148 परिवारों के पुनर्वास से सम्बन्धित प्रस्ताव लंबित पड़े हैं। शासन का कहना है कि इन प्रस्तावों पर जल्द निर्णय लेने के साथ ही पुनर्वास की गति को अब तेज किया जाएगा। जानकारों के अनुसार यह चुनौती ऐसी नहीं जिससे पार न पाया जा सके। आपसी सहमति और सम्बन्धित परिवारों को समुचित मुआवजा या फिर भूमि अधिग्रहण के विकल्पों के आधार पर इस दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

लड़की

तुम लड़की हो,
तुम नाजुक सी कली हो।
तुम सुकोमल हो,
कि तुम अबला बेचारी हो।
तुम करती हो सब की सेवा,
एक मूरत बनकर सब कुछ सहना।
कुछ हो जाए,
तुम मुख से कुछ ना कहना।
तुम घर की बहन, बेटी, बहू हो,
शायद तुम्हें यह सब कुछ सुनना है।
देखो बदल रहा है यह देश,
पर बदला ना तुम्हारा परिवेश।
तुम आज भी कहलाती बेचारी हो,
अब भी खुद को ना पहचान पाई हो।
कुछ नहीं जो तुम कर ना पाई हो
याद करो तुम इतनी शक्ति रखती हो।
एक नन्ही जान को दुनिया दिखलाती हो।
तुम लक्ष्मीबाई,
राजकाज भी करती हो।
शस्त्र, युद्ध और तलवारों से
दुष्टों का मर्दन करती हो।
देश के लिए बलिदान,
देने से ना डरती हो।
तुम बेटी हो बड़े-बड़े सपने रखती हो।
ऐसा कोई काम नहीं,
तुम जो ना कर सकती हो।
तुम बेटी हो तो क्यों डरती हो?
बेवजह क्यों मन ही मन मरती हो
सपने जो रखती बड़े-बड़े,
तो पूरा भी करके दिखलाती हो।
आज जब तुम्हें कोई आंख दिखाएं,
क्यों नहीं उसे अपनी ताकत दिखलाती हो?
जब कोई तुम्हें हाथ लगाए,
अपनी शक्ति क्यों नहीं
उसपर पर आजमाती हो।
तुम वह बेटी हो
जो अपनी रक्षा अपने बल पर कर जाए।
महाकाली बन दुष्टों को
रण में धूल चटा जाए।
कोई भी ना उसे अब बेचारी समझ पाए।
सारी दुनिया को अपनी ताकत से चौकाए।

-जागृति बुटोला
कक्षा- 10
सेंट एडम्स पब्लिक स्कूल
गरुड़ बागेश्वर

ज्योतिष की बातें - 154

27 नवम्बर 2023 को बुध समग्रह की राशि धनु में प्रवेश करेगा। इस एक माह की गोचरावधि में बुध 20 दिन वक्री व उसी अवधि में 10 दिन अस्त भी रहेगा। गुरु की शुभदृष्टि भी बुध पर पड़ेगी अत: बुध अत्यन्त शुभ फलदायक रहेगा। बुध अगले 29 दिन अपने कारक विषयों बुद्धि, व्यापार, व्यवसाय, लेखन आदि में वृश्चिक, कन्या, कर्क, वृषभ, मीन व कुम्भ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

30 नवम्बर 2023 को शुक्र स्वराशि तुला में प्रवेश करेगा। वहाँ पर गुरु की शुभदृष्टि भी रहेगी अत: शुक्र अत्यन्त शुभ फलदायक रहेगा। अगले 25 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ व मीन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

29 नवम्बर 2023 को राहु स्पष्ट मान से मीन राशि में प्रवेश करेगा। राहु जब-जब किसी अन्य ग्रह से युति करेगा तब-तब वह उस ग्रह के फल भी प्रदान करेगा अन्यथा अकेला रहने पर अपने ही फल स्वतन्त्र रूप से जातकों को प्रदान करता है। उपचय भावों में राहु अत्यन्त शुभफल प्रदान करता है। अत: अगले डेढ़ वर्ष मकर, तुला व वृषभ राशि के जातकों को राहु अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य सभी राशियों को यतकिंचत कष्ट की अनुभूति होगी। राश्यनुसार राहु का संक्षिप्त गोचरफल निम्नवत् है। मीन- स्वास्थ्य में गिरावट, मेष- स्थान परिवर्तन, वृषभ- धन लाभ, मिथुन- व्यवसाय में कष्ट, कर्क- भाग्य में उतार चढ़ाव, सिंह- मृत्युतुल्य कष्ट, कन्या- जीवन साथी से मतभेद, तुला- शत्रु विजय, वृश्चिक- सन्तान कष्ट, धनु- मानसिक कष्ट, मकर- पराक्रम वृद्धि, कुम्भ- धन हानि ।

अगले सप्ताह केतु का गोचरफल प्रस्तुत किया जाएगा ।

सम्यक् विचार- 45

राष्ट्रीय ग्रन्थ

कुछ लोगों की मांग है की श्रीमद्भगवद्गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित कर दिया जाए। मुझे लगता है कि गीता महाभारत का एक अंग है इसलिये क्यों न पूरे महाभारत ग्रन्थ को ही राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित कर दिया जाए। पुन: विचार आता है कि रामचरितमानस घर-घर में नियमित पढ़ी जाने वाली पुस्तक है इसी को ही राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित कर दिया जाए। या फिर भागवत महापुराण, जिसका साप्ताहिक पारायण पूरे देश में व्यापक रूप से कहीं न कहीं होता रहता है, को ही राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित कर दिया जाए। गीताएँ बहुत हैं- गणेश गीता, राम गीता, शिव गीता, अष्टावक्र गीता आदि आदि। उन अन्य गीताओं को मानने वाले कहेंगे कि हमारी इस गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित किया जाए। सभी इतिहास पुराण आदि ग्रन्थ वास्तव में वेदों का विस्तार मात्र हैं तो फिर वेदों को ही राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित कर दिया जाए। यदि एक को राष्ट्रीय घोषित किया जाएगा तो अन्य महान ग्रन्थों का क्या होगा।

मेरे विचार से किसी एक ग्रन्थ को राष्ट्रीय घोषित करने की मांग सर्वथा अनुचित है। इससे एक ग्रन्थ की तुलना में अन्य ग्रन्थों की महत्ता को गिराना कहा जाएगा। पुन: ये सनातन धर्म के ग्रन्थ देश काल से बंधे हुए नहीं हैं। ये ग्रन्थ केवल हिन्दू समाज के लिए नहीं हैं, न ही केवल भारतवर्ष के लिए हैं बल्कि सनातन धर्म के ये सभी ग्रन्थ सम्पूर्ण मानव जाति के लिए हैं और सम्पूर्ण विश्व के लिए हैं। किसी एक ग्रन्थ को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करके उसको देश और हिन्दू समाज के बीच में सीमित करना उचित नहीं होगा।

-सरल

महाकाली महोत्सव

गंगोलीहाट। महाकाली महोत्सव समिति रावल गाँव के तत्वावधान में राजकीय इण्टर कालेज खेल मैदान में तीन दिवसीय महाकाली महोत्सव का शुभारम्भ क्षेत्रीय विधायक फकीर राम टम्टा ने किया। कार्यक्रम में स्थानीय कलाकारों के साथ ही आमंत्रित कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। उल्लेखनीय है कि गंगोलीहाट में गंगावली महोत्सव की भली शुरुआत हुई थी लेकिन किन्हीं कारणों से वह सिलसिला आगे नहीं बढ़ सका। पिछले वर्ष व्यापार संघ अध्यक्ष हरीश धामी ने फिर से जोश दिखाया लेकिन शून्य की स्थिति में रावल गाँव की ओर से यह उत्सव किया गया।

चौंथा डीडीहाट महोत्सव

डीडीहाट। नगर पालिका के तत्वाधान में आयोजित चौंथे डीडीहाट महोत्सव में कलाकारों ने मंचीय प्रदर्शन कर जनता का मनोरंजन किया। इसमें श्वेता महरा, चन्द्र प्रकाश, कैलाश कुमार, इन्दर आर्या के साथ ही स्थानीय कलाकार थे। कलाकारों ने कुमाउंनी, गढ़वाली, हिन्दी गीतों के साथ अपनी प्रतिभा दिखाई। इस पाँच दिवसीय महोत्सव का शुभारम्भ जिला पंचायत अध्यक्ष दीपिका बोहरा ने किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के महोत्सव पहाड़ों की संस्कृति को बेहतरीन मंच प्रदान करते हैं। कूटा छलिया दल, जोहार जनजाति संगठन, विद्या सागर इण्टर कालेज ने झोंकी निकाली पालिकाध्यक्ष कमला चुफाल ने सबका आभारत व्यक्त किया।

पिंगलीनाथ का चौथी मेला

थल। हीपा गाँव के पिंगलीनाथ मन्दिर में चौथी मेला का सुन्दर आयोजन किया गया। पूजा-अर्चना के बाद ग्रामीणों ने संयुक्त रूप से भण्डारे का आयोजन किया। हीपा-भैसीया उडियार के पिंगलीनाग मन्दिर में हर वर्ष दीपावली व दूतिया पर्व के बाद चौथी के दिन यह मेला लगता है। इसमें दर्जनभर से अधिक गाँवों की भागीदारी होती है। यहाँ पुजारी राजेन्द्र प्रसा, फकीर सिंह कार्की, हिम्मत सिंह रावत, कुंडल सिंह रावत, त्रिलोक कार्की, प्रवीन कार्की, जीवन सिंह, चामू सिंह कार्की, दीपक सिंह सहित तमाम लोग व्यवस्था बनाने में थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रानीखेत में बिल्डर कम्पनी के निदेशकों के खिलाफ मामला दर्ज

रानीखेत। जमीन सम्बन्धी मामलों में चर्चा में बने हुए रानीखेत व इसके आसपास क्या कुछ हो रहा है सबको पता है। इस बीच नगर क्षेत्र की बड़ी बिल्डर कम्पनी के निदेशक मण्डल में सम्पत्ति विवाद के बाद कम्पनी निदेशकों समेत 6 के खिलाफ पुलिस ने मामला दर्ज कर जाँच शुरु कर दी है। असल में बिल्डर कम्पनी एक्साल्टर के निदेशक सचिन चौधरी व गजराज चौधरी ने निदेशक अली अकबर निवासी गारेख पार्क शाहदरा दिल्ली और शिल्पा गुप्ता निवासी दिलशाद कालोनी दिल्ली के साथ ही मो. आजमी, जफर, मोहित गुप्ता, जसवन्त सिंह के खिलाफ आपराधिक साजिश कर कम्पनी की सम्पत्तियों को बगैर अधिकार के बेचने के आरोप लगाते हुए पुलिस में मामला दर्ज कराया है।

आरोप है कि उन्होंने आपस में ही आपराधिक साजिश कर कम्पनी की सम्पत्तियों को बेचने का काम किया। जबकि कम्पनी के सभी निदेशकों ने तय किया था कि चारों के हस्ताक्षर के बिना कोई समझौता नहीं किया जायेगा।

ड्योडार में बनेगा नया महाविद्यालय

पिथौरागढ़। पिथौरागढ़ महाविद्यालय के विश्वविद्यालय कैम्पस बनने के बाद हुई उलझन को देखते हुए तय किया गया कि मुख्यालय के निकट ड्योडार क्षेत्र में नया महाविद्यालय बनाया जायेगा। इसके तैयारी शुरु हो चुकी है। करीब 125 नाली जमीन का चयन पूरा कर प्रस्ताव शासन को भेज दिया गया है।

सीलिंग भूमि पर आवासीय पट्टे दें

काशीपुर। सीलिंग भूमि पर आवासीय पट्टे आवंटि करने और बाहरी व्यक्तियों को आवासीय पट्टे न दिये जाने की मांग को लेकर सीतारामपुर के ग्रामीणों ने बसपा जिलाध्यक्ष राकेश कुमार गौतम के नेतृत्व में उपजिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा है। बताया कि सीलिंग के दौरान सीताराम पुर गाँव में कुछ जमीन निकली थी। ग्राम सभा खरमामानी सीतारामपुर के अनु. जाति, पिछड़ी जाति व अन्य व्यक्तियों जो भूमिहीन हैं उनको उक्त भूमि पर आवासीय पट्टे आवंटित किये जाएं।

बाजपुर में भूमि बचाओ आन्दोलन

बाजपुर। संयुक्त किसान मोर्चा के के बैनर तले तहसील परिसर में चलाए जा रहे भूमि बचाओ सत्याग्रह आन्दोलन अभी धरना जारी है। धरना स्थल पर सामूहिक प्रतिज्ञा दोहराते हुए सफलता मिलने तक आन्दोलन जारी रखने की बात कही गई। इस अवसर पर भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष कर्म सिंह पड्डा, हरमिंदर सिंह बरार, कुलवीर सिंह, राजेन्द्र सिंह गिल, अमरनाथ शर्मा आदि मौजूद थे।

सरयू पुल खोलने की मांग

बागेश्वर। सरयू नदी पर बने पैदल पुल की मरम्मत किए जाने एवं पुल में आवागमन सुचारु किए जाने की मांग को लेकर कांग्रेस कमेटी ने झूला पुल में प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष भरत सिंह डसीला के नेतृत्व में नारेबाजी करते हुए कहा कि भाजपा नेता विकास कार्यों के झूठे दावे कर रहे हैं जबकि इस पुल बन्दी के कारण व्यापारियों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

गुमदेश में डिग्री कालेज की मांग

चम्पावत। नेपाल सीमा से लगे गुमदेश क्षेत्र में डिग्री कालेज की मांग उठ रही है। 50 हजार से अधिक की आबादी वाले इलाके में 6 इण्टर कालेज हैं लेकिन उच्च शिक्षा के लिये युवाओं को 24 से 40 किमी दूर लोहाघाट महाविद्यालय में प्रवेश लेना होता है। ग्राम प्रधान संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष सरिता अधिकारी और बीडीसी सदस्य मदन कालौनी का कहना है क्षेत्र में महाविद्यालय की मांग काफी पुरानी है लेकिन किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। डिग्री कालेज की मांग को लेकर जनप्रतिनिधियों ने स्थानीय लोगों के साथ बैठक कर पुनः मांग दोहराई है।

सभासद ने डीएम को इस्तीफा सौंपा

चम्पावत। गैरलचौड़ वार्ड की सभासद कविता गोस्वामी ने नगर पालिका परिषद पर आरोप लगाते हुए जिलाधिकारी को अपना इस्तीफा सौंपा। कहा कि पालिका बगैर विश्वास में लिये मनमाने काम कर रही है।

सभासद ने डीएम नवनीत पाण्डे को इस्तीफा सौंपते हुए कहा कि बोर्ड बैठक में जो प्रस्ताव उनके माध्यम से दिये जाते हैं उन पर अमल नहीं होता है। जबकि गुपचुप तरीके से इन प्रस्तावों को हटा दिया जाता रहा। इसके अलावा मनमाने ढंग से बगैर उनको विश्वास में लिये कार्यों को बढ़ावा दिया गया। सभासद ने आरोप लगाया कि पालिका का कार्यालय उनके बार्ड में आता है। जहाँ उन्होंने तमाम भ्रष्टाचार होने का दावा किया।

सभासद ने कहा कि उनके वार्ड में पूर्व में बने लाखों रुपये के शौचालय तोड़कर नए बनाए गए हैं। इसमें सरकारी धन की बर्बादी की गई है। आरोप लगाया कि ईओ को कई बार मौखिक रूप से बोर्ड की बैठक में अवगत कराया लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। कहा कि जनहित की अनदेखी से आहत हाकर वह अपने पद से इस्तीफा दे रही हैं। पालिकाध्यक्ष ने आरोप निराधार बताए हैं

बनकोट से सड़क के लिये उबाल

गणाई/गंगोलीहाट। बनकोट-धनौलसेरा-फतेहपुर सड़क का कार्य पूरा न होने पर ग्रामीण लोकसभा चुराव का बहिष्कार करेंगे। बनकोट से फतेहपुर तक की सड़क के लिये ग्रामीणों में उबाल है। उन्होंने ढनोलसेरा गोलू मन्दिर देवता परिसर में बैठक कर ऐलान कर दिया है कि इस बार वह अपनी मांग मनवाकर ही मानेंगे। बनकोट से बन रही सड़क का कार्य फतेहपुर में रुका हुआ है। 25 नवम्बर को भूमि पूजन करने के साथ ही सड़क का निर्माण कार्य शुरु करने की बात कही और इसके लिये ग्रामीणों ने धनराशि के साथ ही अपनी भूमि के लिए एनओसी प्रदान की। इसके लिये मुख्यमंत्री धामी के साथ ही गंगोलीहाट के विधायक फकीरराम और कपकोट के विधायक सुरेश गढ़िया को भी आमंत्रण किया। देखें अब आगे क्या होता है।

परिक्रमा

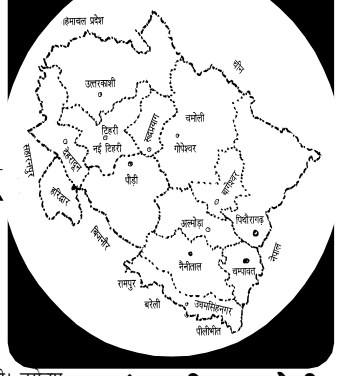

श्रीमद् भागवत कथा भव्य आयोजन

हल्द्वानी। शहर में श्रीमद् भागवत भागवत कथा का भव्य आयोजन हुआ। कथा स्थल लालडांड रोड नरोत्तम विबहार में कथा व्यास पंकज जोशी ने श्रीमद् भागवत की महत्ता के बारे में बताया। उन्होंने कथा प्रसंग के माध्यम से सभी से यह भी अपील की कि अपनी सनातन संस्कृति पर चलें। जगत के माया-मोह व दिखावे में वर्तमान में बिगड़ने के बहाने बहुत हैं। ऐसे में कथा श्रवण करना ही संभलने का मार्ग है। भागदौड़ के इस समय में भी सद्कर्म ही साथ चलेंगे। कलश यात्रा के साथ हुए हुए आयोजन में बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित थे। 17 से 23 नवम्बर तक के आयोजन में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ जुटी। आयोजक व निवेदक मनोज सुमत्याल, निर्मला सुमत्याल ने सभी का आभार प्रकट करते हुए आगे भी इस प्रकार के आयोजन में भागीदार रहने की अपील की। नरोत्तम विहार में प्रथम बार इस प्राकर के आयोजन की पूर्णाहुति, आरती के बाद महाप्रसाद के साथ समापन हुआ।

आशा-उम्मीद क्रिकेटर महेन्द्र धौनी

अल्मोड़ा। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धौनी बीते दिनों अपने ग्राम ल्वाली आए और जिस प्राकर उन्होंने लोगों से मुलाकात के साथ ही ग्राम देवता की पूजा की उससे क्षेत्रवासियों को आशा-उम्मीद है। साथ ही यह सभी के लिये प्रेरणा है कि कहीं भी रहो चाहे कितनी ही ऊँचाई छू लो अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहिये। धौनी अपने चार दिनी दौरे में सपत्नीक आए और प्रवास के दौरान गाँव-गाँव घूमे। वापस लौटते समय शहर फाटक होते हुए कैंची धाम दर्शन फिर नैनीताल के बाद विदा हुए। माही से बच्चे-बूढ़े सबने खुलकर बातचीत की और उम्मीद भी रखी। युवाओं ने भी खेल की दुनिया के बारे में सवाल किए और बताया कि इलाके में खेल मैदान तक नहीं है। ऐसे में धौनी ने गाँव की खाली जमीन के बारे में जानकारी ली और वादा किया कि वह अपने खर्चे से नाटाडोल गाँव में खेल मैदान बनाएंगे। माही ने अपने पैतृक गाँव के बारे में माँ सुनी बातों का उल्लेख किया और लोगों से मिल भावुक हो गए।

प्राग फार्म की ३०० एकड़ भूमि मिली

हल्द्वानी। जमरानी बांध प्रभावितों के लिए प्राग फार्म की 300.5 एकड़ भूमि सिंचाई विभाग को मिल गई है। उधम सिंह नगर जिले के गडरियाबाग (प्राग फार्म) की यह भूमि राजस्व विभाग ने सिंचाई विभाग को हस्तान्तरित कर दी है। चीफ टाउन प्लान के माध्यम से जल्द टाउन प्लानिंग की जायेगी। ढांचागत सुविधाओं के विकास के बाद प्रभावितों को यहाँ बसाया जायेगा।

जमरानी बांध परियोजना के 6 गाँवों के 1261 परिवार विस्थापन की श्रेणी में हैं, प्रभावितों की 50 हेक्टेयर जमीन बांध में डूब रही है। जबकि किच्छा के प्राग फार्म में 1216 हेक्टेयर भूमि पर प्रभावितों को बसाया जायेगा। प्रथम श्रेणी परिवारों को पुनर्वास स्थल पर एक एकड़ कृषि भूमि और 200 वर्ग मीटर का आवासीय भूखण्ड दिया जायेगा। द्वितीय श्रेणी के प्रभावितों को नकद मुआवजा मिलेगा जबकि तृतीय श्रेणी के प्रभावितों को पुनर्वास स्थल पर 50 वर्गमीटर पर प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत आवास मिलेगा या इतनी की प्रतिकर राशि।

गौचर मेले में लगी जागर

गौचर। गौचर मेले में लोक कलाकारों की धूम रही। प्रभातफेरी के साथ शुरु हुए मेले में स्थानीय स्कूलों की प्रस्तुति सराही गई। बसन्ती बिष्ट ने अपने जागर गायन से सबको मोहित किया। उन्होंने नरसिंह व देवी जागरों से भक्तिमय वातावरण बनाया। इसके अलावा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ।

गोपेश्वर में रामलीला जारी

गोपेश्वर। बस स्टेशन पर संयुक्त रामलीला मंच गोपेश्वर के तत्वावधान में आयोजित रामलीला जारी है। इसका शुभारम्भ पालिकाध्यक्ष पुष्पा पासवान ने किया। गायिका साक्षी डोभाल ने सुन्दर गीतों से लोगों को मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर रामलीला मंच के संरक्षक चन्द्र प्रकाश भट्ट, अनूप पुरोहित, कमल राणा, आयुष चौहान, जगमोहन सिंह, देवेन्द्र गौड़, जगदीश पोखरियाल, अनूप बौड़ाई, लक्ष्मी प्रसाद, दीपक बिष्ट, संजय कुमार आदि मौजूद थे।

पांडवलीला कमेटी के अध्यक्ष बने पंवार

रुद्रप्रयाग। भरदार क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम दरमोला में पाण्डव लीला कमेटी का गठन किया गया। इसमें अध्यक्ष बलवीर सिंह पंवार एवं सचिव रमेश सिंह पंवार को मनोनीत किया गया। पाण्डव चौक रदमोला में आयोजित बैठक में पाण्डव लीला की पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर नई कार्यकारिणी के चुनाव हुए। इसमें विक्रम सिंह उपाध्यक्ष, राजेन्द्र कमरवाल कोषाध्यक्ष बने।

नैणी देवी यात्रा पर ग्रामों में प्रवास

नारायणबगड़। कोट-भटियाण-भुलाणी की नैणी देवी अपनी यात्रा के साथ ग्रामों में प्रवास कर रही है। इसी क्रम में देवी अपनी बड़ी बहन जेठुलबर डुंग्री की नैणी देवी के साथ दो दिन बिताने के बाद पैतोली गाँव होते असेड़ गाँव में रुकी। इन बहनों का 38 वर्षों बाद मिलन हुआ। इसके बाद यात्रा सीरी से रैंगाँव, नन्दा गाँव होते असेड़ पहुँची।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

समीक्षा

यादों का बिम्ब

प्रोफेसर दीपा गोबाड़ी की तीन पुस्तकें इन दिनों चर्चा में हैं। इसमें पहली 'यादों का बिम्ब' अविचल प्रकाशन हल्द्वानी से प्रकाशित है। लेखिका ने इसके प्राक्कथन में ही बताया दिया है कि वह पहाड़ से किस प्रकार प्रयागराज में शिक्षा के लिये गईं और विख्यात साहित्यकारों का सानिध्य मिल पाया था। सन् 1982 से 1984 तक उनके द्वारा लिखी गई डायरी में जो हृदयगत भाव, कविताएं थीं, उन्हें पुस्तक के रूप में पिरोने का सपना वह साकार कर रही हैं। समर्पण, यादों के बिम्ब, राहें, मृगतृष्णा, भँवर, धुआँ, मुसाफिर, रुदन इत्यादि शीर्षकों से अपनी स्मृतियों और मन के उद्गारों को पिरोया है। बिना लाग लपेट के सीधी कविताओं को पढ़ने में डॉ.गोबाड़ी की पहाड़ से मैदार के बीच की यात्रा का प्रभाव प्रतीत होता है।

उजास

'उजास' नाम से डॉ. दीपा गोबाड़ी का कुमाउंनी/हिन्दी कविता संग्रह है। पहाड़ की संस्कृति में रमी लेखिका ने बहुत बारीकियों से उन बिम्बों को उकेरा है जो सिर्फ लोक व्यवहार को जीने वाला ही कर सकता था। इसमें बेरीनाग से लेकर धारचूला तक की उन यादों को समेटा गया है जो उनके बचपन की हैं और प्रकृति से जुड़ी हैं। प्रार्थना 'जय जय गणपति' से शुरु होकर लेखक ने इजा शीर्षक से 'इजा! म्यार भूख हाड़ में त्वील निवाल देख....' कविता के साथ कुमाउंनी भाषा में उनकी पकड़ को सिद्ध कर दिया। उनकी एक कविता 'जिन्दगी कें जी जियो' इस प्रकार से है-

किलै निश्वासी रैछा,
किलै हैगे जिन्दगी दुश्वार
कुछ टैम जिन्दगी कें जी लियो....
कस डाढ़ मारण, कस हल्ल गुल्ल
रत्ती ब्यांण उठबेर चिड़िन कें दांण दीभेर
उनर अलमस्त चहचहाट सुणि लियो...

कुहासा छँट गया

विदुषी डॉ. दीपा गोबाड़ी की तीसरी कृति जो इस बीच प्रकाशित हुई है- -कुहासा छँट गया' में सुरूचिपूर्ण पाठ दिखाई देता है। लेखक ने भले ही इलाहाबाद में पठन-पाठन किया हो लेकिन उनका पहाड़ में बीता बचपन और पास-पड़ोस, साथ-विद्यालय वह सब यादें सिमटकर उन्हें वह सब लिखने को उकसाती रही हैं जिसे उन्हनें प्रकृति, पहाड़, देशप्रेम, स्त्री विमार्श, व्यंग के साथ प्रस्तुत किया है। उत्तरायणी पर बागनाथ धाम की महिमा को वह इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं-

श्री बागनाथ जी के धाम में,
आ पहुँचा उत्तरायणी का त्यौहार
लग गया मेला, लग गये सब रास्ते
स्नान कर आते हैं सरयू किनारे।
बच्चों की खिलखिलाहट है,
महिलाओं की ठिठोली है
बुड्डे बुढ़ियों का शोर है,
मेलार्थियों की बेचैनी रेल-पेल है.....

इसमें तीन दर्जन से अधिक कविताएं पिरोई गई हैं। **-समीक्षक**

सिलक्यारा में सुरंग धंसने की घटना ने सवाल खड़े कर दिये

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तरकाशी। यमुनोत्री हाईवे पर निर्माणाधीन सुरंग धंसने की घटना ने सवाल खड़े कर दिये हैं। सुरंग में फंसे श्रमिकों को बचाव के लिये देश-विदेश के विशेषज्ञ जुट गए लेकिन.....। चारधाम सड़क परियोजना के तहत यमुनोत्री हाईवे पर निर्माणाधीन 4.35 किमी सुरंग में का निर्माण कार्य हो रहा है, जो अब 500 मीटर शेष बचा है। इस सुरंग का कार्य मजदूर दो शिफ्ट में करते हैं। बताया गया कि सुरंग में 12 घण्टे की शिफ्ट समाप्त कर मजदूर रविवार 12 नवम्बर 23 की सुबह करीब आठ बजे दीपावली की छुट्टी मनाने के लिए जोने ही वाले थे कि पहले 5.30 बजे ही सुरंग के सिलक्यारा वाले मुहाने में 250 मीटर आगे 35 मीटर हिस्से में भूस्खलन हो गया। सुरंग में उस समय 45 मजदूर थे। मलबा गिरता देख 5 मजदूर बाहर भाग लेकिन 40 वहीं फंसे रह गये।

5 दिनों से सुरंग में फंसे श्रमिकों को बचाने के लिये सेना ने कमान संभाली। दिल्ली से सेना का विमान आगर मशीन लेकर पहुँचा। इस बीच श्रमिकों के परिजन भी आने लगे और उनका गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने अन्य मजदूरों के साथ मिलकर कम्पनी के खिलाफ नारेबाजी करते हुए फंसे लोगों को निकालने की मांग की। सिलक्यारा टनल में भूस्खलन के बाद एनएचआईडीसीआर की ओर से वीडियो रिकार्डिंग भी करवाई जा रही है। जिसमें रेस्क्यू ऑपरेशन के साथ सुरंग में पल-पल के हालात पर नजर रखी गई।

टनल में सौ घण्टे से अधिक समय तक फंसे मजदूरों को निकालने के लिये जो मशीन लगाई गई उसके खराब होने पर नई ऑगर मशीन ने 16 नवम्बर को काम करना शुरु किया। इस रात को टनल में 900 मिलीमीटर व्यास के तीन पाइपों को 18 मीटर तक बिछा दिया गया। ग्यारह पाइप टनल में बिछने हैं। केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री एवं राष्ट्रीय राजमार्ग राज्यमंत्री जनरल वी.के.सिंह(सेनि) ने टनल में रेस्क्यू अभियान का निरीक्षण किया और कहा श्रमिकों को बचाना सरकार की पहली प्राथमिकता है।

इस बीच पता चला कि सुरंग में 6 दिन से फंसे मजूदों को बचाने के लिये चल रहे बचाव कार्य के तहत 22 मीटर तक पाइप डालने के बाद मशीन खराब हो गई। जबकि मजदूरों तक पहुँचने के लिये 70 मीटर तक ड्रिलिंग होनी है और विदेशी विशेषज्ञों की मदद लेनी पड़ी। देश दुनिया की नज़र और फिकर इस ओर रही। इस मामले से के सबक बहुत हैं..

आंखिर बिना सेफ्टी ऑडिट के कैसे निर्मित हो रही हैं उत्तराखण्ड में सुरंगें?

'डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

चारधाम रोड परियोजना की टनल में भू धंसाव से फंसे श्रमिकों को बचाने की जद्दोजहद सब देख-सुन चुके हैं। समय रहते सम्वेदनशील हिस्से का स्थायी उपचार किया जाता तो शायद सुरंग के अन्दर 40 मजदूर नहीं फंसते। यमुनोत्री आईवे पर निर्माणाधीन सिलक्यारा सुरंग में मलबा गिरने की यह कोई पहली घटना नहीं है। इसी सम्वेदनशील हिस्से में पूर्व में भी कई बार मलबा गिर चुका है। इसका स्थायी उपचार सुरंग आरपार करने के बाद किया जाना था। चारधाम सड़क परियोजना के तहत सिलक्यारा से पोलगाँव के बीच करीब 45 लम्बी सुरंग बनाई जा रही है। बीते रविवार को सुरंग के सिलक्यारा वाले मुहाने से करीब 230 मीटर अन्दर 35 मीटर हिस्से में भारी भूस्खलन हुआ जिसका मलबा करीब 60 मीटर दायरे में फैलने से सुरंग बन्द हो गई। इससे सुरंग में काम कर रहे 50 मजदूर फंस गये। निर्माण कार्य से जुड़े मजदूरों ने बताया कि जिस जगह भूस्खलन हुआ है वह सुरंग का काफी सम्वेदनशील हिस्सा है। पहले भी कई बार उक्त जगह पर मलबा गिरा है। यहाँ सुरक्षा के लिए इन्तजाम किए गए थे लेकिन स्थायी उपचार सुरंग के आरपार करने के बाद किया जाना था। बताया कि यदि इस हिस्से का स्थायी उपचार करते हुए आगे निर्माण कार्य किया गया होता तो इस तरह की घटना नहीं होती।

पर्यावरणविद् कह रहे हैं कि यदि पारिस्थितिक चिन्ताओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो उत्तरकाशी के सिल्क्यारा में चार धाम मार्ग पर एक निर्माणाधीन सुरंग के आंशिक रूप से ढहने जैसी भयावह घटनाएं होती रहेंगी। पर्यावरण विद् चौपड़ा ने पिछले साल चारधाम ऑल वेदर रोड पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त उच्चाधिकार प्राप्त समिति

के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने समिति के अधिकार क्षेत्र को परियोजना के केवल दो गैर-रक्षा हिस्सों तक सीमित करने सम्बन्धी शीर्ष अदालत के आदेश पर निराशा व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था कि आधुनिक तकनीकी हथियारों से युक्त इंजीनियर हिमालय पर हमला कर रहे हैं। अपने पत्र में उन्होंने यह भी कहा था कि समिति की भूमिका परियोजना के गैर रक्षा राजमार्गों तक सीमित कर दी गयी है।

उत्तरकाशी में सलक्यारा-डंडालगांव के एक हिस्से के ढहने से उसके अन्दर श्रमिकों के फंसने के एक दिन बाद चौपड़ा ने कहा कि अगर पारिस्थितिकीय चिन्ताओं को दूर नहीं किया गया तो ऐसी भयावह घटनाएं होती रहेंगी। चारधाम ऑल वेदर रोड के निर्माण खासतौर से सड़कों को चौड़ीकरण के लिए अपनाए जा रहे तरीकों पर अन्य विशेषज्ञ भी नाखुश हैं। राज्य योजना आयोग के पूर्व सलाहकार हर्षपति उनियाल ने कहा कि उत्तराखण्ड के लिए ये ऑल वेदर सड़कें खास तौर से उनके चौड़ीकरण के लिए उपयोग में लाई जा रही गलत तकनीकी के कारण एक त्रासदी बन गई है। नदी घाटी संरेखण को सुरक्षित नहीं माना जा सकता। अगर आप ढलानों को छेड़ेंगे तो भूस्खलन जैसी आपदाएं अवश्यम्भावी हैं। उत्तराखण्ड गठन के पहले दशक में प्राकृतिक आपदाओं की संख्या बहुत कम थी। वर्ष 2002 में टिहरी जिले के घनसाली क्षेत्र में बादल फटने की एक घटना में 36 व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी, जबकि 2003 में उत्तरकाशी शहर में वरुणावत पर्वत से हुए भूस्खलन ने भारी तबाही मचाई थी। 2010 के बाद प्राकृतिक घटनाओं की संख्या में बहुत इजाफा हुआ और उसके बाद 2013 में आई केदारनाथ आपदा ने तो मौत और तबाही की विनाश लीला दिखाई। मानसून के दौरान तो प्रदेश में छोटी-बड़ी आपदाएं जब-तब आती रहती हैं। इस साल भी मानसून के दौरान भारी बारिश और उसके कारण आई आपदाओं ने जमकर कहर बरपाया। इस दौरान केदारनाथ और बदरीनाथ राजमार्गों पर दरारें भी आईं जिनके कारण यातायात भी बाधित रहा। चारधाम ऑल वेदर सड़क परियोजना को भी गढ़वाल क्षेत्र में कई जगह नुकसान हुआ। मुख्यमंत्री के अनुसार इस मानसून में प्रदेश में करीब 1000 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इसरो द्वारा पेश किए गए भूस्खलन क्षेत्र मानचित्र में रुद्रप्रयाग जिले को आपदाओं की दृष्टि से बहुत सम्वेदन शील दर्शाया गया है। लेकिन सरकार ने इन्हें कम करने की दिशा में कोई कदम नहीं उठाए हैं। केदारनाथ रुद्रप्रयाग जिले में है। साल की शुरुआत में जोशीमठ में भूधंसाव का मामला भी सामने आया था, जहाँ कुछ निवासियों ने इस समस्या के लिए विष्णुगाड़ पनबिजली परियोजना को जिम्मेदार ठहराया था। उनका कहना था कि इस शहर के पास से गुजर रही परियोजना की हेड रेस भूमिगत सुरंग के कारण शहर के भवनों और रास्तों में दरारें आयीं। इन मुद्दों को लेकर मुखर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कहा कि हिमालय की सम्वेदनशीलता को देखते हुए विकास परियोजनाओं को अनुमति दिए जाने से पहले उनकी हर पहलू पर जाँच की जानी चाहिये। जल्दबाजी में बेतरतीब विकास किया जाएगा तो आपदाएं तो आएंगी ही। उत्तराखण्ड के लिये ऑल वेदर सड़कें खास तौर पर उनके चौड़ीकरण के लिए उपयोग में लाई जा रही गलत तकनीकों के कारण एक त्रासदी बन गई है। नदी घाटी संरेखण को सुरक्षित नहीं माना जा सकता। अगर आप ढलानों को छेड़ेंगे तो भूस्खलन जैसी आपदाएं अवश्यम्भावी हैं।

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि हम लगातार हिमालय पर हमला कर रहे हैं। जिसकी वजह से भूस्खलन की घटनाएं बढ़ गई हैं। उत्तराखण्ड में निर्माणाधीन चारधाम परियोजना और अन्य सड़क निर्माण कार्यों की सुरक्षा मानकों को सवालों के घेरे में ला दिया है। इसको लेकर शासन भी उलझन में दिखाई दे रहा है। एक ओर निर्माण कार्यों में सुरक्षा की अनदेखी हो रही है तो दूसरी ओर यह तथ्य भी सामने आया है कि उच्च हिमालयी निर्माण कार्यों में सुरक्षा की अनदेखी हो रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों के साथ-

एस.के.एम.
सीनियर सेकेंडरी स्कूल
रामपुर रोड, हल्द्वानी

SIDDHIVINAYAK SOLVENT LLP
Plot No. C-8A, Phase-III, ELDECO Sidcul Industrial Park Sitarganj (U.S.Nagar)

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)